देवतातत्त्व एवं आनन्द आदि स्पन्दनोंसे युक्त

सात्त्विक रंगोलियां

भूमिका

१. उद्देश्य

रंगोलियोंकी अनेक पुस्तकें उपलब्ध होते हुए भी ‘रंगोली’ विषयपर लघुग्रन्थ प्रकाशित करनेका उद्देश्य यह है कि सभी समझ सकें कि ‘सात्त्विक रंगोली’ जैसा भी कुछ विषय होता है ।

२. महत्त्व

हिन्दू धर्मके सभी त्योहार तथा विधियां किसी न किसी देवतासे सम्बन्धित हैं । उस विशिष्ट त्योहारपर अथवा विधिके समय विशिष्ट सम्बन्धित देवताका तत्त्व वातावरणमें सदैवकी तुलनामें अधिक मात्रामें होता है अथवा विधिके माध्यमसे वहां आकर्षित होता

है । यह तत्त्व और अधिक मात्रामें आए तथा उसका सभीको लाभ हो; इस हेतु उस तत्त्वको आकर्षित तथा प्रक्षेपित करनेवाली रंगोलियां इस लघुग्रन्थमें दी हैं । इन रंगोलियोंके कारण देवताका तत्त्व आकर्षित एवं प्रक्षेपित होनेसे वहांका वातावरण उस तत्त्वसे आवेशित होता है और सभीको इसका लाभ होता है ।

३. विशेषताएं

अ. 'शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध एवं उनकी शक्ति एकत्रित होते हैं ।' अध्यात्मके इस तत्त्वके अनुसार रंगोलीके रूप एवं रंग में यदि थोडासा भी परिवर्तन किया जाए, तो रंगोलीके स्पन्दन कैसे बदलते हैं, यह रंगीन पृष्ठोंपर दी गई श्री गणपति, श्रीराम, दत्त एवं श्री दुर्गादेवीके तत्त्वोंसे युक्त रंगोलियोंसे ज्ञात होता है ।

आ. प्रत्येक देवतासे शक्ति, भाव, चैतन्य, आनन्द एवं शान्ति, ऐसी पांच प्रकारकी अनुभूतियां हो सकती

हैं । लघुग्रन्थमें प्रस्तुत प्रत्येक रंगोलीमें विद्यमान विशिष्ट तत्त्वकी जानकारी दी है ।

इ. रंगोलियोंमें देवताका अधिकतम १० प्रतिशत तत्त्व लाया जा सकता है । इस लघुग्रन्थमें दी रंगोलियों में अधिकाधिक देवतातत्त्व आकर्षित करने हेतु सनातन के साधकोंने उन्हें भावपूर्ण ढंगसे बनानेका प्रयत्न किया है । साधकोंका भाव एवं स्तर बढनेपर, रंगोलियों में देवतातत्त्वकी मात्रा १० प्रतिशतके निकट पहुंचने लगती है ।

४. रंगोलीका चयन

४ अ. त्योहार, व्रत एवं उत्सवों के अनुसार : सामान्य त्योहार, व्रत एवं उत्सव कौनसी तिथिपर आते हैं, इसकी सारणी लघुग्रन्थमें दी है । यह भी दिया है कि सारणीमें उस देवताका तत्त्व आकर्षित करनेवाली रंगोली किस पृष्ठपर है ।

५. विविध प्रसंगोंके लिए उपयुक्त

जन्मदिन, आरती उतारना इत्यादि प्रसंगोंमें द्वारपर, उसी प्रकार थालीके आसपास आनन्ददायक रंगोलियां कैसी होनी चाहिए, यह भी इस लघुग्रन्थमें दिया है ।

६. व्यावहारिक सूचना

जहांतक सम्भव हो, लघुग्रन्थके रंगीन पृष्ठोंपर प्रस्तुत सात्त्विक रंगोलियोंमें दिए रंगोंका प्रयोग करें । उनसे रंगोलीकी सात्त्विकता बढती है ।

परिणामस्वरूप देवताका तत्त्व आकर्षित होकर उपासकको इसका लाभ होता है तथा वायुमण्डल भी शुद्ध होता है ।

७. प्रार्थना

'इस लघुग्रन्थसे केवल रंगोलियां ही नहीं, अपितु सबकुछ सात्त्विक बनानेके लिए सभीके प्रयास आरम्भ हों', यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**